Course --M.A ,Education,part -1

Paper -3rd, Philosophical Foundation of Education

Prepared by -Dr Meena Kumari

Topic -- Geeta Darshan & Education

गीता दर्शन तथा शिक्षा

(1)प्रस्तावना -- वैदिक कालीन युग के ग्रंथों में महाभारत तथा गीता का नाम महान ग्रंथों में है। गीता में 18 अध्याय तथा 700 श्लोक हैं और यह संस्कृत भाषा में लिखा गया है। गीता का दर्शन आदर्शवादी दर्शन पर आधारित है । यह संसार की नश्वरता के साथ-साथ आत्मा तथा परमात्मा में भी विश्वास कराने की बात करता है ।निष्कर्म काम की चर्चा गीता में की गई है। कर्म को ही माना गया है। भारत ही नहीं विश्व में आज यह ग्रंथ बहुत ही प्रासंगिक तथा प्रमाणिक है। इसमें कर्म के सहारे ही दुखों से छूटने का बात किया गया है। विश्व में गीता का अनुवाद लगभग 30 भाषाओं में हो चुका है ।कृष्ण को इस महान ग्रंथ का रचयिता माना जाता है। वे इस ग्रंथ में कृष्ण और अर्जुन के बीच के संवाद को ज्ञान के स्वरूप वर्णन किए गए हैं।

(2) गीता के दार्शनिक सिद्धांत -- दर्शन की दृष्टि से भगवत गीता अमूल्य निधि है क्योंकि गीता में बहुत सारे दार्शनिक सिद्धांतों को शामिल किया गया है जो निम्नवत है :---

- ब्रह्म -- गीता के अनुसार ब्रह्मा या ईश्वर सर्वोपरि है। यह अविनाशी, नित्य, शुद्ध, सर्वत्र व्याप्त , सर्वकालिक तथा अनादि काल से है । इसके दो रूप हैं निर्गुण और सगुण।

- आत्मा -- गीता दर्शन में आत्मा को अविनाशी, अजन्मा ,शाश्वत, सर्वव्यापक निर्विकार और अव्यक्त बतलाया गया है ।आत्मा को परमात्मा का ही अंश माना गया है ।

- जगत -- गीता में जगत के विषय में कहा गया है की इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा से हुई है और अंत में ब्रह्मा में हीं जाना है ।

- परा एवं अपरा -- परा के अंतर्गत जीव के चेतन तत्व को समन्वित किया गया है । यह जगत को धारण करती है तथा परा और अपरा दोनों से ऊपर ईश्वर तत्व हैं। अपरा प्रकृति में आकाश, वायु, अग्नि ,जल ,पृथ्वी मन,अंहकार और बुद्धि 8 तत्व प्रकृति में माना गया है । अपरा भौतिक तथा अचेतन होता है।
    - ज्ञान योग, कर्म योग तथा भक्ति योग-- इन तीनों के समन्वय से जीवन के दर्शन को समझाया गया है ।गीता में इस तीनों योगों का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया गया है। ज्ञान योग सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि ज्ञान योग के द्वारा ही व्यक्ति सच्चिदानंद के दर्शन करता हुआ मोक्ष को प्राप्त करता है ।कर्म योग का अर्थ गीता में कर्तव्य अथवा

सामाजिक दायित्व से लिया गया है। गीता में कर्मयोग को सुंदर व्याख्यान मिलता है। भक्ति मार्ग को गीता में ईश्वर प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन और मार्ग बतलाया गया है। ईश्वर में श्रद्धा रखकर निस्वार्थ भाव से कर्म करके व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त कर सकता है!

(3) गीता के शैक्षिक सिद्धांत--शिक्षा दर्शन की दृष्टि से भगवत गीता एक अमूल्य निधि है । ओड के शब्दों में भारतीय शिक्षा दर्शन का सार यदि कहीं देखना है तो वह गीता में दिखलाई है गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं----

- गीता के अनुसार जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति करना है। गीता के अनुसार मनुष्य को अपनी व्यक्तिगत पहचान होना चाहिए तथा मन पर नियंत्रण कर काम, क्रोध लोभ ,मोह ,अहंकार तथा आशक्ति से दूर रहना चाहिए ताकि इंद्रियों के नियंत्रण द्वारा मोक्ष की प्राप्ति हो सके।

- इंद्रियों पर नियंत्रण करने नैतिकता का विकास होता है और प्राप्ति के लिए जीवन का विकास होना भी शिक्षा का एक उद्देश्य है उच्च नैतिकता तथा का मूल आधार है।

- गीता के शिक्षा दर्शन में निष्काम कर्म की प्रेरणा का उद्देश्य रखा गया है। बच्चों को शिक्षा द्वारा कर्म प्रधान जीवन व्यतीत करने की योजना देना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

- गीता के शिक्षा दर्शन का एक मुख्य उद्देश्य बच्चों में चिंतन शक्ति का विकास करना भी है।

- धार्मिक जीवन के विकास का उद्देश्य भी गीता के शिक्षा दर्शन में मिलता है कि बच्चों को धर्म और अधर्म के बीच अंतर का ज्ञान होना चाहिए।

- बच्चों को ईश्वर के प्रति भी श्रद्धा का भाव उत्पन्न होना चाहिए क्योंकि ईश्वर ही सर्वोपरि है।

(4) गीता दर्शन का पाठ्यक्रम -- गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम का 2 भाग होना चाहिए।

- परा विद्या -- इस विद्या का तात्पर्य आध्यात्मिक विद्या से है। गीता में परा विद्या के अंतर्गत आध्यात्म और मोक्ष प्राप्ति के क्षेत्र आदि नामों से पुकारा गया है । इसके अंतर्गत आत्मज्ञान आता है। परा विद्या के अंतर्गत इंद्रियों के नियंत्रण से मोक्ष की प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त करने का तरीका है।

- अपरा विद्या -- अपरा विद्या का अर्थ भौतिक विद्या से है! अपरा विद्या भौतिक जगत का ज्ञान प्राप्त करना है। अपरा विद्या के अंतर्गत समस्त प्रकार के वैज्ञानिक सामाजिक,

व्यवसायिक विषयों का अध्ययन आता है ।जिनकी सहायता से मनुष्य भौतिक जगत में सफलतापूर्वक अपना जीवन निर्वाह कर सकें। इस विद्या का ज्ञान आवश्यक होते हुए भी सर्वोपरि नहीं है। विद्या का ज्ञान ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है ।यह चिकित्सा, विज्ञान, ललित कला, संगीत इतिहास ,भूगोल इत्यादि से संबंधित है।

(5) गीता दर्शन एवम् शिक्षण विधियां -- गीता दर्शन के अनुसार बहुत सारी विधियां प्रचलित है जिनमें मुख्य विधिया प्रश्नोत्तर विधि ,वार्तालाप विधि, तर्क विधि तथा अनुकरण विधि है। यह सब विधियां गीता काल में प्रचलित थी और यह आज के वर्तमान युग में भी प्रचलित है।

इस तरह गीता दर्शन वर्तमान युग में बहुत सारे महत्वपूर्ण शिक्षा के उद्देश्यों को हासिल करने में सहायक है